JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वच्छता की आवष्यकता एवं वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रांसगिकता राष्ट्रीय अवधारणा के रूप में

डॉ. वर्षा सागोरकर,

सह. प्राध्यापक राजनीति विज्ञान

शास. हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल

''कोई व्यक्ति जो लापरवाही से यहॉ–वहॉ थूक कर कूड़ा–करकट फैककर या अन्य किसी रूप में जमीन को गंदा करने वायु को दूषित करता है वह मनुष्य व प्रकृति दोनों के प्रति पाप करता है। मनुष्य का शरीर भागवान का मंदिर है, जो व्यक्ति इस मंदिर में प्रवेष करने वाली वायु को दूषित करता है वह वास्तव में मंदिर को अपवित्र करता है।''[1]

महात्मा गांधी

''एक दैनिक समाचार पत्र में प्रकाषित एक समाचार ने यह मनन करने हेतु विवष कर दिया कि सिंगापुर जैसे देष में वहॉ की सरकार व नागरिक स्वच्छता के प्रति कितने अधिक जागरूक एवं सचेत है।'' ''दो जर्मन नवयुवकों द्वारा नवम्बर माह में एक मेट्रो टेन को गंदा एवं बदरंग कर दिया व इस अपराध हेतु उन्हें नौ मास का कारावास व बेंत से मारने का दण्ड दिया गया।'' सिंगापुर सरकार ने मलेषिया सरकार से प्रत्यर्पण संधि के तहत (नवयुवकों के मलेषिया पलायन करने पर) उनका प्रत्यर्पण करवाकर चार माह तक उन पर मुकदमा चलाया व यह दण्ड निष्चित किया।'' विगत वर्षों ब्राजील में हुए फुटबाल विष्व कप में जपानी प्रषंसकों को देखकर सम्पूर्ण विष्व अंचभित हुआ। अपनी टीम की हार पर निराष प्रषंसकों का पोस्टर बैनर फाड़ना, पानी की बोतने फैकना आम बात है, पर जापानी दर्षक ऐसी अवस्था में भी दर्षकदीर्घा को स्वच्छ करते हैं। विभिन्न देषों के पर्यटक जब जापान पहुॅचते हैं तो वहॉ की स्वच्छता व तकनीकी विकास से अत्याधिक प्रभावित हो जाते हैं। दर असल स्वच्छता जापान के संस्कारों में है, जो यह सिद्ध करती है कि स्वच्छता एक राष्ट्रीय सोच है जो और स्वदेष के अतिरिक्त परदेष में भी काम करती है, जहॉ ऐसी बाध्यता नहीं होती।

जहॉ तक भारत की बात है, वहॉ स्वच्छता की दिषा में काफी कुछ करना शेष है। जबकि हम सभी जानते हैं कि स्वच्छता आवष्यकता के साथ–साथ उत्कृष्ट जीवन मूल्य भी है। हमारी परम्परा में

सदैव ही यह स्तुति रही है कि ''मैं अपवित्र से पवित्र बनू, मात्र बाह्य रूप से नहीं बल्कि अन्तस से भी।'' हम एक सुसंस्कृत समाज के अंग एवं समृद्ध संस्कृति के उत्तराधिकारी भी है और स्वच्छता हमारे सुसंस्कृत होने की प्रथम एवं अनिवार्य शर्त है। पशु पक्षी भी अपनी भौतिक स्वच्छता के प्रति सचेत रहते हैं। मानव इस सृष्टि का सर्वश्रेष्ट प्राणी है और इस नाते उसका उत्तरदायित्व मात्र अपने घर तक सीमित ना होकर अंनत प्रकृति तक विस्तृत है। यदि हम अपनी मातृभूमि से प्रेम करते हैं तो इसे स्वच्छ रखना, इसका श्रृंगार करना हमारा कर्तव्य बन जाता है।

प्रधानमंत्री मोदी राष्ट्रीय स्तर के प्रथम नेता है जिन्होंने स्वच्छता को राष्ट्रीय प्राथमिकता के रूप में रखा। स्वच्छता के मुद्दे को पूर्व में कभी इतने उच्च स्तर पर नहीं उठाया गया। भारत में स्वच्छता दोयम दर्जे का कार्य माना जाता है और नीरस विचार भी। जबकि हमारे धर्मों के समस्त पर्व स्वच्छता से जुड़े हैं। हर व्यक्ति अपने स्तर पर स्वच्छता रखना चाहता है किंतु सार्वजनिक क्षेत्र में उसकी भागीदारी नगण्य है। इसके लिए गांधी जी के सदृष्य सत्याग्रह अथवा लाल बहादूर शास्त्री के द्वारा किया गया एक दिवस का उपवास का आव्हान जैसे अभियान आरम्भ करने की आवष्यकता है। किसी भी कार्य में सम्पूर्ण राष्ट्र की व हर व्यक्ति की भागीदारी हो इस हेतु नवजागरण के अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं। ज्ञात इतिहास में ''ऋग्वेद'' को प्रथम नवजागरण, वैदिककाल के दर्षन दिग्दर्षन को द्वितीय नवजागरण के रूप में जाना जाता है। विदेषी सत्ता सभ्यता व लूट के विरूद्ध दयानंद सरस्वती एवं विवेकानंद के सांस्कृतिक अभियान एवं वन्दे मातरम् की ऊर्जा से ओत–प्रोत स्वधीनता संग्राम में राष्ट्र की चेतना को जाग्रत करने का अभूतपूर्व कार्य किया। 2 अक्टूम्बर 2014 को प्रधानमंत्री के नेतृत्व में तृतीय नव जागरण (स्वच्छता अभियान) आरम्भ किया और जिसमें समस्त भारतीयों से राष्ट्र निर्माण का भागीदार होने का आह्वान किया।

साधारणतः जनता शासकीय कार्यों में भागीदारी नहीं करती, मात्र सत्ता का निर्धारण कर निरपेक्ष कर या तटस्थ हो जाती है। यह प्रथम अवसर है जब इस आव्हान के माध्यम से जन–तंत्र का भेद मिटा है और स्वच्छता की राह पकड़ भारत की अद्वितीय संस्कृति व दर्षन को विष्ववरेण्य बनाने का संकल्प किया है।

प्रमुख शब्द – स्वच्छता, स्वभाव, आचरण, संस्कृति व विकास।

स्वच्छता क्या है? और यह इतनी अधिक अवष्यक क्यों है? यह ज्ञात करना अत्याधिक आवष्यक है जब से मानव की उत्पत्ति हुई है तब से ही स्वास्थ्य एवं स्वच्छता को चुनौती मिली है। देखा जाए तो स्वच्छता एक मौलिक कला है मानव कि स्वाभाविक सौन्दर्य वृत्ति के कारण ही उसमें स्वच्छता की भावना या प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। कला की उत्पत्ति मानव की सौन्दर्य उपासना है का परिणाम है। किन्तु मानव समाज की अन्य प्रवृत्तियॉ जैसे–जैसे जटिल होती जाती है वैसे–वैसे कला की धारणा में परिवर्तन होता जाता है। एकांगी कलाकार अपनी कला के लिए उतना ही भाग स्वच्छ करता है, जितना उसके अंकन के

लिए आवष्यक है। गांधी जी स्वयं मानते थे कि ''स्वच्छता ईष्वर की सेवा है इसलिए हमें अपने अन्तस एवं बाह्य दोनों को निर्मल रखना होगा, क्योंकि जो कर्म को त्याग देता है वह गिरता है और जो कर्म करते हुए फल को छोड़ देता है वह उठता है।'' प्रत्येक उत्तम विचार ऊपर से अवतरित होता है और जब यह विचार स्वच्छता से संबंधित हो तो ना केवल उसका सम्मान होना चाहिए बल्कि अति शीघ्र उस पर अमल भी होना चाहिए क्योंकि भौतिक स्वच्छता वैचारिक धार्मिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन का आधार है।

बाइबिल में स्वच्छता को अनिवार्य मानते हुये इसके चार प्रमुख आयामों का उल्लेख किया है। स्वच्छता का शाब्दिक अर्थ है – ''लोगों के स्वास्थ्य एवं कल्याण में सुधार लाना।'' इसके बिना जीवन की कल्पना करना कठिन है। मानव में यदि इन आयामों के अनुसार स्वच्छता हो जाए तो पृथक से किसी स्वच्छता अभियान की आवष्यकता ही अनुभव नहीं होगी। वो आयाम है–षारीरिक, आध्यात्मितक व नैतिक एवं आर्थिक।

1. **शारीरिक :–** शारीरिक स्वच्छता मानव की महती आवष्यकता है और यह ज्ञात होना अति आवष्यक है कि वह किस तरह रखी जाए। लुई पाष्चर ने भी यह सिद्ध किया कि जीवाणु ही विभिन्न रोगों का कारण है। हमारे समस्त धर्म, पर्व स्वच्छता से जुड़े है और स्वच्छता व स्वच्छ रहने पर जोर देते है उसके पश्चात भी मानव शारीरिक स्वच्छता के प्रति उदासीन ही रहते हैं। भारतीय अपनी शारीरिक स्वच्छता के अन्तर्गत मात्र स्नान करने व दॉत साफ रखने तक ही सीमित है। हाथों की अस्वच्छता व अन्य वस्तुओं खाद्य सामग्री की अस्वच्छता मानव को विभिन्न रोगों से ग्रस्त कर देती है। इससे बचाव के लिए आवष्यक है कि मानव को अपनी गंदगी अपने आप स्वच्छ रखने की आदत विकसित करना होगा। कोई भी कार्य चाहे वह प्रतिदिन प्रातः उठने का हो या अभ्यास, का वह तब तक आदत नहीं बनता जब तक वह हमारे अन्तस में उसके लिए इच्छा या कामना जाग्रत नहीं होती। यदि हम स्वच्छता को अपने नित्य कर्म में सम्मिलित कर लेते है तो वह आदत बन जाएगी फिर उसके लिए श्रम करने की आवष्यकता ही नहीं पड़ेगी।

औसत भारतीय अपने घर की स्वच्छता के प्रति कितने ही सजग क्यों न हो किन्तु सार्वजनिक स्थलों की स्वच्छता के प्रति असजग है। यह एक कटू सत्य है कि यदि कोई टोकने वाला न हो तो हम स्वच्छ स्थलों को भी अस्वच्छ करने में तनिक भी नहीं हिचकिचातें। इसी अस्वच्छता ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि को धूमिल किया है। 2011 में भारत की जनसंख्या का आंकड़ा 1 अरब 21 करोड़ अरब तक पहुॅच गया है। किन्तु स्वच्छता व स्वास्थ्य का प्रतिषत मात्र 1.64ः ही रहा। किसी भी राष्ट्र का मापक वहॉ का स्वस्थ्य समाज होता है। व्यक्तियों के स्वास्थ्य का सीधा प्रभाव नागरिक शक्ति पर पड़ता है। कार्यषक्ति उत्पादन शक्ति को प्रभावित करती है। जिस राष्ट्र की उत्पादन शक्ति दृढ़ होगी वह

विकास के नवीन आयामों को गढ़ने में सफल होगा। मनुष्य जाति के लिए साधारणतः स्वास्थ्य प्रथम नियम है ''तन चंगा तो मन चंगा'' नई पीढ़ी की नवीन सोच कि स्वस्थ्य रहना स्वास्थ्य धर्म है।

2. **आध्यात्मिक :–** निरोगी काया में सदैव निर्विकार मन का वास होता है यह एक निर्विवाद व स्वयं सिद्ध सत्य है। मन एवंत न का अनन्य संबंध होता है। हमारा मन निर्विकार हो तो मानक हर प्रकार की हिंसा से मुक्त हो जाएगा। मन के अस्वच्छ या कलुषित होने से सम्पूर्ण समाज व राष्ट्र में रोग, भय, अपराध व अनाचार दृष्टिगोचर होता है। इस अस्वच्छता को स्वच्छ करने हेतु शुचिता की आवष्यकता होती है। महर्षि पंतजलि योग के द्वारा मन की शुद्धि करने पर जोर देते हैं। सत्य से मन की शुद्धि होती है अच्छे विचार उत्पन्न होते हैं। मैली या अस्वच्छ वस्तुओं को धोया जाता है, या फिर फेक दिया जाता है। तन से अधिक अस्वच्छ तो मन ही होता है जो अपने ऊपर अस्वच्छता की परत दर परत चढ़ाया चला जाता है। फिर ऐसी अवस्था आ जाती है जब धोने से काम नहीं चलता। जब किसी वस्तु के साथ ऐसा होता है तो हम उसे फेंक देते हैं, तो ऐसे ही मन को भी फेंकना पड़ेगा जिसे कहते हैं ''विसर्जन''। शाब्दिक अर्थ में फेंकना या विसर्जन करना एक ही सदृष्य है किंतु दोनों के मध्य महीन सा आध्यात्मिक अंतर है। फेंकने के पश्चात कुछ भी शेष नहीं रहता वस्तु चली जाती है मात्र अनुभूति रह जाती है किंतु मन विसर्जित है। जब अस्वीकृति एवं प्रंषासा में अधिक रूचि होती है। स्वयं संचालित मन अपने वष में रहता है अतः मन की स्वच्छता अति आवष्यक है।

3. **नैतिक :–** अनैतिकता को स्वच्छ करना भी नैतिकता कहलाती है। वृक्षारोपण, पर्यावरण, जल संरक्षण एवं विघुत व जल की बचत जैसे उपयोगी कार्य समाज में अत्याधिक आवष्यक है। दहेज, बालविवाह, शारीरिक हिंसा व अंधविष्वास सहित समस्त कुरीतियों की स्वच्छता भी अति आवष्यक है। हमारा दावा है कि हम इस संसार के सबसे अधिक स्वच्छ मानव है इसलिए हमारा अंहकार जितना महान है उतना पतन भी। कहा जाता है कि ''अग्निहोत्र से ब्राह्मण्ड की शुद्धि, वृक्षारोपण से वायु की, जल से तन की, सत्य के मन की, दान से धन की, बुद्धि की शुद्धि ज्ञान से, तप से आत्मा की, 100ः मतदान से राजनीतिक शुद्धि व प्रत्येक व्यक्ति के समर्पण भाव से राष्ट्र की शुद्धि संभव है।'' स्वार्थ, आलस्य एवं प्रमाद की प्रवृत्ति ने स्वच्छता के प्रति हमारी संवेदना को अत्यंत संकुचित कर दिया है। मानव के अन्तस से तमस उत्पन्न हो गया है और वह उस आवरण से परे कुछ भी देखने में असमर्थ सा अनुभव कर रहा है। घर भी हमारा सड़क भी हमारी, और सड़के ही बता देती है कि हम कितने सभ्य है। यदि हम कुछ करना चाहे तो अनंत संभावनाएॅ है।

पष्चिमी देषों की स्थानीय संस्थाएं सदैव स्वच्छता के कार्य में लिप्त नहीं होती बल्कि स्वच्छता वहॉ एक व्यवस्था है जिसे वहॉ के नागरिक नैतिक दायित्व के रूप में स्वीकार करते हैं। इस हेतु ''लाओस'' नामक निर्धन राष्ट्र के नागरिकों की नैतिकता प्रषंसनीय है ''थाईलैण्ड'' एवं वियतनाम के मध्य एक छोटा सा राष्ट्र है लाओस जिसकी जनसंख्या मात्र 65 लाख है एवं प्रति व्यक्ति आय 65 रूपये

प्रतिदिन। इस राष्ट्र को ह्यूमन डेव्हलपमेंट के इंडेक्स में 38वॉ स्थान प्राप्त है। वियतनाम युद्ध के समय अमेरिका ने प्रत्येक 8वें मिनिट में एक बम फेंका था। वहॉ की महिलाओं ने इसे स्वच्छ करने का बीड़ा उठाया। शाम 5 बजते ही एक सायरन बजता, हर क्षेत्र की महिलाएं अपने दल के नेता के साथ सड़क पर आकर एक एक बम को चुनती, जिसमें कई हाताहत भी हुई। ऐसा करते करते यह एक आदत के रूप में विकसित हो गई और लाओस पूर्णतः स्वच्छ।

आर्थिक – किसी भी देष की स्वच्छता का प्रभाव उसकी अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है। **संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट** के अनुसार भारत में अस्वच्छा के कारण 54 अरब डालर यानि 3442 अरब रू. की हानि होती है जो देष की जी.डी.पी. का 6.4ः है अर्थात षिक्षा पर व्यय होने वाली राषि से अधिक नहीं। स्वच्छता के अभाव में भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी जी.डी.पी. के 60ः से अधिक राषि से वंचित है। भारत में नीतियों, नियमों, विनियमों व कानूनों का ऐसा मकड़जाल फैला है जिसने व्यापारिक, आर्थिक तौर पर भारत को विष्वबैंक की 189 राष्ट्रों की सूची में 137वें स्थान पर खड़ा कर दिया है। एषियाई विकास बैंक की क्रियेटिव प्रोडक्टिव इंडेक्स में 24 बड़ी शक्तियों (आर्थिक) में भारत का स्थान 14वॉ है। यह रिपोर्ट यह बताती है कि नियमों की लालफीताषाही, भ्रष्टाचार आदि के कारण निवेषक भारत में पूॅजी निवेष करने में हिचकिचातें हैं। नवाचार के बिना ढॉचागत उन्नति संभव ही नहीं। ग्लोबल वेल्यू चैन में हमारी भागीदारी होना आवष्यक है क्योंकि 60ः व्यापार इन्हीं विधियों से होता है। उद्यमियों की कठिनाईयों के कारण निवारण के लिए सभी स्तरों पर शीर्ष नेतृत्व द्वारा अभियान चलाने की आवष्यकता है। स्वच्छ भारत अभियान ना केवल भौतिक स्वच्छता बल्कि जनता की मानसिकता को भी प्रभावित करेगा। इसे 2019 तक प्राप्त करने का जो लक्ष्य रखा है वह बहुत ही कठिन है किंतु असंभव नहीं। भौतिक संसाधन जुटाने के साथ–साथ सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक एवं व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास करने होंगे तब कही जाकर स्वच्छ भारत के लक्ष्य को हम प्राप्त कर पायेंगे, क्योंकि मानसिकता के परिवर्तन से जो सांस्कृतिक क्रांति आयेगी वह हमारी जीवन शैली का अभिन्न अंग बन जाएगी। यदि निम्न उपायों एवं सुझावों को ध्यान में रखकर अभियान चलाया जाए तो अवष्यक ही 2019 तक हम इस लक्ष्य को प्राप्त करने में अवष्य ही सफल होंगे।

सुझाव :–

1. जनता यदि यह निष्चय करे कि हमारे क्षेत्र के जनप्रतिनिधि जिस क्षेत्र से दावेदारी या निर्वाचन में उम्मीदवारी करें उस क्षेत्र का वातावरण पूर्णतः स्वच्छ व अनुकूल होगा तभी उन्हें मत देकर विजयी बनाया जाए।
2. सरकारी कर्मचारियों के सी.आर. में प्रोत्साहन स्वरूप स्वच्छता हेतु पृथक से अंक देने का प्रावधान रखा जावें।

3. सभी नगरों एवं सार्वजनिक स्थानों में स्वच्छता की आवष्यकता पर वार्ताओं एवं चर्चाओं का आयोजन किया जाना चाहिए।
4. सरकार द्वारा दी जाने वाली आर्थिक सहायता एवं सुविधाएं, चाहे कोटा परमिट हो या राषन कार्ड, इनके साथ स्वच्छता को अनिवार्य रूप से जोड़ा जायें।
5. कोई भी व्यक्ति चाहे कितना ही बड़ा या महान ही क्यों न हो, अगर किसी भी प्रकार की अस्वच्छता करता है तो उसे समाज में निम्न स्तर ही मिलना चाहिए। इसमें प्रोत्साहन के साथ–साथ सामाजिक प्रताड़ना को भी जोड़ा जाए।
6. अस्वच्छता करने वाले को सार्वजनिक स्थान पर दण्ड दिया जाए व उन पर जुर्माना भी लगाया जाए।
7. भारत में स्वच्छता को लोग अपना कार्य नहीं मानते बल्कि पांरम्परिक समाज में इसे एक विषेष वर्ग का कार्य माना जाता है। ऐसी धारणाओं को जन आन्दोलन द्वारा परिवर्तित किया जावें।
8. पश्चिमी देषों में हर तरह के कचरे का निस्तारण किया जाता है। ऊर्जा, खाद अथवा कचरा निस्तारण एक अच्छा रोजगार है व जीडीपी का भाग भी।
9. जब तक कचरें के साथ मजबूत आर्थिकी नहीं जुड़ेगी, तब तक वह सड़कों पर ही दिखाई देगा अतः इसे अर्थव्यवस्था से जोड़ना होगा।
10. शोध संस्थानों को कचरे के उपयोग के शोधकार्य पर लगाना होगा, जो यह शोध करेगें कि कचरें का क्या–क्या उपयोग किया जावे।
11. अन्य गैर जरूरी उघोगों की सब्सिडी हटाकर कचरें कुड़े से संबंधित उघोगों को प्रोत्साहित किया जाए जिसके कचरे के निस्तारण के साथ नवीन उघोगों का निर्माण हो जाए।
12. अधिकारी नेता व्यावसायिक संस्थान, प्रतिष्ठान एवं अन्य लोागें और संस्थाओं को स्वच्छता हेतु प्रोत्साहित किया जावे।
13. सरकार दाता की भूमिका से बाहर निकलकर सहयोगी की भूमिका या रूप में कार्य करें।
14. प्राचीन, परम्परागत मिथकों को तोड़कर स्वच्छता की संस्कृति एवं मानसिकता को विकसित करना होगा।
15. नुक्कड़ नाटकों, विज्ञापनों एवं विवाह जैसे सामाजिक कार्यक्रमों के माध्यम से जागृति लायी जाये। हरियाणा के भिवानी शहर में एक दुल्हन के पिता ने उपहार स्वरूप सड़क साफ करने के बड़े–बड़े वैक्यूम क्लीनर दिये।
16. साधु, महात्मा संत एवं सन्यासियों की वाणी जनता के दिल व दिमाग को बहुत प्रभावित करती है अतः इसे धर्म का भाग बनाकर इसका पालन अनिवार्य किया जावे।
17. जिस प्रकार सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान करने पर जुर्माना व दण्ड का प्रावधान है, उसी प्रकार का प्रावधान स्वच्छता के स्वरूप को नष्ट करने के लिए होना चाहिए।

18. विघार्थियों के पाठ्यक्रम में इसे सम्मिलित कर अनिवार्य रूप से इसका पालन भी करवाया जावे। स्विट्जरलैण्ड में जिस तरह 6 से 14 वर्ष तक धर्म की षिक्षा अनिवार्य है उसी तरह भारत में 6 ये 14 वर्ष तक स्वच्छता की षिक्षा भी अनिवार्य कर देनी चाहिए।
19. नगरपालिकाओं द्वारा स्वच्छता कर्मचारियों पर सख्ती की जाए और उनके कार्य का आडिट किया जावे।
20. ऐसे सभी पैकिंग के समान का उत्पादन बंद कर देना चाहिए जिसकी रिसायकलिंग ना हो सके।
21. नगरपालिकाओं को 100ः रिसायकलिंग करने पर (कचरें के) इन्टेंसिव दिया जावे।
22. कचरा बीनने वालो से कुड़ा खरीदने की बुनियादी व्यवस्था को स्थापित किया जाना चाहिए।
23. हमें भी उतनी ही वस्तुऐं खरीदनी चाहिए जो अति आवष्यक हो अन्यथा बिना आवष्यकता के खरीदी गई वस्तुऍं श्रम समय अर्थ व कुड़ें में वृद्धि करती है।
24. स्वच्छता तीनों स्तरों पर होनी चाहिए हांयजिन, सेनिटेषन एवं गार्बेज।

वास्तव में सामुदायिकता का बोध वृहत्तर अच्छाई एवं सामूहिक उत्तरदायित्व के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। अन्यथा इस स्वच्छता अभियान का भी वही हश्र होगा जो अन्य ऐसे सामाजिक सोदेष्यता वाले अभियानों के साथ हुआ है। वास्तव में आधरभूत ढॉचें के साथ–साथ ठोस एवं कृषि से उत्पन्न कचरें के लिए उपचार की आवष्यकता है। इस दिषा में आंध्रप्रदेष की ''बाल्बिली नगरपालिका'' का प्रयास सराहनीय कहा जा सकता है। वहॉ कचरें को दो प्रकार से एकत्रित कर खाने योग्य कचरे को पशुओं हेतु पार्क में व शेष को कम्पोंजड करके बेंच दिया जाता है(कागज, मेंटल एवं प्लास्टिक को छॉटकर कम्पनियों को बेंचा जाता है।) शेष को लैण्डफिल्ड में डाल दिया जाता है। इसी क्रम में आन्ध्रप्रदेष की ''सूर्यापेट'' नगरपालिका एक कदम और आगे हैं। क्रेताओं को अपना थैला लाने पर 5 रूपये की छूट है। सड़कें एकदम पूर्ण रूप से स्वच्छ अलग से झाडू लगाने की आवष्यकता नहीं क्योंकि वहॉ की नगरपालिका अपना कार्य पूर्ण दक्षता के साथ कर रही है। लैण्डफिल्ड में डाले गये कचरे से विघुक्त उत्पादन किया जाता है। ये अवष्य है कि दोनों नगरपालिकाओं द्वारा निस्तारण से प्राप्त आय का प्रतिषत अवष्य बहुत कम है।

पूना शहर भी आदर्ष निस्तारण का सबसे बड़ा उदाहरण है। पूना बाब्बिली, सूर्या पेट एवं तमिलनाड की नम्मकल नाम क नगरपालिका ने ''वेस्ट मेनजमेंट'' का निजीकरण कर दिया है। पष्चिमी देषों के उदाहरण तो बहुत है किंतु हमारे एक छोटे से पड़ोसी राष्ट्र ''बांग्लादेष'' ने कचरे में कमी लाने की व्यवस्था सुगमता से अपना ली है। ढाका की झुग्गियों में ''ओपन एयर बैरल कपोंस्टिग'' प्रणाली लागू कर दी गई है। इसमें 20 डॉलर प्रति टन कार्बन क्रेडिट की आय होती है। भारत की भांति सिंगापूर में भी भूमि का अभाव है तो वहां 60ः से अधिक कचरे की रिसायकलिंग कर दी जाती है। स्वीडन में कचरा समस्या नहीं बल्कि ऊर्जा उत्पन्न करने के स्त्रोत के रूप में जाना जाता है।

निष्कर्ष :– स्वच्छता हेतु समस्त उपायों साधनों का प्रयोग करके ही लक्ष्य की ओर अग्रसर हुआ जा सकता है। चूंकि जीवन निष्चित अवधि के लिए ही प्राप्त है और हर एक पल का उपयोग करने से ही जीवन में पूष्प खिलेगें। मनुष्य अपनी परिस्थितियों का दास नहीं बल्कि निर्माता है और इस कार्य में सभी को मन प्राण से जुटना होगा। मानसिक स्वच्छता हेतु हम यह प्रण या संकल्प ले सकते हैं कि, ना रिष्वत लेगें, ना ही देगें, ना मदिरा पान करेगें ना ही करवाएगें, गौ मॉस खाएगें ना खिलाएगें, यथासंभव स्वभाषा का प्रयोग करेगें और छुआ–छूत नहीं मानेगें। यदि समाज सभी स्तरों पर स्वच्छ और सबल होगा तो राजनीति में भी अस्वच्छता नहीं रहेगी। गांधी नाम की माला जपने से मात्र जन आंदोलन नहीं किया जा सकता बल्कि उसके लिए स्वयं गांधी बनना होगा क्योंकि गांधीजी के लिए स्वच्छता, भौतिक मुद्दा नहीं वरन् आध्यात्मिक व मानसिक मुद्दा था। हम श्वेतों को परतंत्र बनाने का अपराधी नहीं मान सकते जब तक की हम ही अपने लोगों के साथ गुलामों के सदृष्य व्यवहार ना करें।

राष्ट्र तब तक स्वच्छ नहीं होगा जब तक की हमारा मन स्वच्छ नहीं होगा। इतिहास पुरूष वही बनता है जो जाति, नस्ल, भाषा, साम्प्रदायिक छुआछूत से परे समाज के वंचित लोगों अल्पसंख्यकों एवं निम्न वर्ग का आलिंगन करें। हर भारतीय 10 मीटर के घेरे पर दृष्टि रखे, उसे अस्वच्छ होने से बचाए तो जादू हो सकता है। स्पष्ट सोच, सच्ची लगन एवं परिश्रम से ही इसे प्राप्त किया जा सकता है– ''जल से नहाया व्यक्ति स्वच्छ होता है परन्तु पसीने से नहाया व्यक्ति पवित्र होता है।'' जिसमें अर्थ प्राप्ति की तनिक भी संभावना होती है हम उसे सहेजकर रखते हैं। पर स्वच्छता के लिए हमें विषेष कुछ नहीं करना होगा, बस थोड़ा सा अतिरिक्त श्रम, स्वच्छता के प्रति संवेदनषीलता एवं स्वबोध का विस्तार ही पर्याप्त है। छोटे–छोटे प्रयासों से ही समाज व स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है। राष्ट्र के इस महाभियान में जाति, धर्म, सम्प्रदाय आदि समस्त विभेदों से ऊपर उठकर प्रत्येक जन व हर वर्ग का योगदान आवष्यक है। साधु संत महात्माओं को समाज में स्वच्छता के प्रति संवेदनषीलता का अलख बजाना चाहिए। राजनीतिक दलों को भी परस्पर स्वस्थ्य प्रतिस्पर्धा द्वारा जन–जन को प्रषिक्षित करने का कार्य करना होगा। हमस ब इसी पावन भूमि के अंग है, इसको स्वच्छ रखना एक प्रकार की ईष्वर की आराधना है, तो हम मात्र वर्जित कृत्य न कर इस पूजा में सहयोगी हो सकते हैं। यू.जी.सी. ने 12 वीं पंचवर्षीय योजना के तहत जनरल डेव्हलपमेंट हेतु जो अनुदान दिया है, उसका उपयोग पूर्णतः स्वच्छता पर ही किया जायेगा। एल. एन. मिथिला विष्वविद्यालय दरभंगा(बिहार) में स्वच्छता को एक विषय के रूप में सम्मिलित कर लिया गया है। इसे ैवबपवसवहल वि दपजंजपवद का नाम दिया गया है। अब स्वच्छता को लागू करने में कानून सहायता करेगा। दंडित करने जुर्माना लगाने और कानून के अनुपालन जैसे विषयों को ट्रेफिक चालान की तर्ज पर लागू करने पर भी विचार किया जा रहा है, ताकि उल्लंघन करने वालो पर घटना स्थल पर ही कार्यवाही की जा सके। चूंकि स्वच्छता राज्य सूची का विषय है। अतः राज्य सरकारों द्वारा आदर्ष कानून बनाने की योजना को पूर्णता प्रदान करने की कगार पर है। साथ ही स्वच्छ भारत कोष में पैसों का दान देने पर कर से मुक्ति का प्रावधान भी है।

एक ईमानदार सच्चा प्रयास तो अवष्य किया जा सकता है। यह एक इस सुन्दर राष्ट्र के प्रति हमारी जिम्मेदारी भी है। अ बवह समय आ गया है कि हमस ब उठ खड़े हो और भारत को स्वच्छ बनाने में अपना योगदान दे। यह राष्ट्र सभी का ओर सभी के लिए है अतः इसका स्वच्छ स्वरूप सभी के द्वारा किये गये प्रयासों से ही निखरेगा जो समृद्ध भारत के स्वच्छता की दिषा में उठाया गया एक कदम होगा। जब स्वच्छता 1 अरब 25 करोड़ भारतीयों के मस्तिष्क, व्यक्तित्व, सामाजिक एवं राष्ट्रीय चरित्र में समाविष्ट हो जायेगी तभी भारत स्वच्छता एवं समृद्ध होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जगमोहन सिंह राजपूत स्वच्छता के कुछ और पक्ष – दैनिक जागरण 2 जून 2015, पृ.सं. 8।
2. हृदयनारायण दीक्षित – नेतृत्व का चमत्कार, दैनिक जागरण, भोपाल संस्करण, 4 अक्टूबर, 2014, पृ.सं. 5।
3. वेदप्रताप वैदिक – थोड़े से गांधी बने तो बात बने, दैनिक भास्कर, भोपाल संस्करण, 13 जनवरी, 2015, पृ.सं. 8।
4. चेतन भगत – पहले स्वच्छ मानसिकता जरूरी – अभिव्यक्ति, दैनिक भास्कर, भोपाल संस्करण, 10 दिसम्बर, 2014, पृ.सं. 8।
5. भरत झुनझनवाला – सफाई की सही राह, दैनिक जागरण, भोपाल संस्करण, 15 अक्टूबर, 2014, पृ.सं. 6।
6. डॉ. उदित राज – स्वच्छ भारत अभियान को चुनौती, दैनिक जागरण, भोपाल संस्करण, 31 अक्टूबर, 2014।
7. निरंजन कुमार – मोदी और गांधीवाद, दैनिक जागरण, 7 अक्टूबर 2014।
8. दिलबर गोठी – जमीन पर हो सफाई, दैनिक जागरण, 6 अक्टूबर, 2014।
9. नवनीत गुर्जर – दैनिक भास्कर भोपाल संस्करण, 7 जनवरी 15, पृ.सं. 8।
10. राजेष कालरा – जीरो टालरेन्स से कूड़ा मुक्त होगा देष, दैनिक भास्कर भोपाल संस्करण 15 दिसम्बर, 2014, पृ.सं. 8।
11. डॉ. भरत झुनझनवाला – स्मार्ट सिटी का सपना, दैनिक जागरण, संस्करण, 8 अक्टूबर 2014, भोपाल।
12. दैनिक भास्कर करंट अफेयर्स – 21 अक्टूबर, 2014, पृ.सं. 6।
13. सामाजिक सुधार का स्वच्छ रास्ता, सम्पादकीय– दैनिक भास्कर, 8 दिसम्बर, 2014।